VISION AHEAD
(An Online Peer Reviewed/ Refereed Bilingual International Journal of Multidisciplinary Studies)
VOLUME 1, JAN-DEC 2023 **ISSN:**

मनुष्य माने जाने की जद्दोजहद – नालासोपारा

डॉ0 आभा त्रिपाठी
एसोसिएट प्रोफेसर,
सी0एम0पी0 कॉलेज,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

सारांश

पोस्ट बॉक्स नं 203 नालासोपारा में चित्रा मुद्गल स्त्री–पुरुष पहचान से इतर जन्में विनोद उर्फ़ बिन्नी उर्फ़ बिमली की कहानी उपन्यास विधा के माध्यम से कहती हैं। समाज ऐसे मनुष्य को किन्नर (किम्+नर) हिजड़ा आदि पहचान देकर एक अलग खाँचे में रखता है। उनकी जगह समाज की मुख्य धारा से अलग ऐसे लोगों के बीच है जो अपने–अपने घर तथा समाज से बहिष्कृत हैं। अच्छे खाते–पीते परिवार से संबंधित होते हुए भी सबके सामने हाथ फैलाने को बाध्य हैं। जीने के संकट उनके सामने भी हैं। उनका जीवन उनके लिए प्रतिपल शर्मिंदगी का पर्याय बन जाता है। मुख्य धारा से कटा यह पूरा समुदाय शिक्षा से वंचित है, संपत्ति के अधिकार से वंचित है, परिवार के स्नेह से वंचित है, कुल–गोत्र की पहचान से वंचित है। हमारी आख्यान परम्परा में इस वर्ग से जुड़ी अनेक कहानियाँ मौजूद हैं। समाज में स्त्री–पुरुष से इतर पहचान के साथ जन्म लेना एक भयावह त्रासदी है। विनोद इस त्रासदी को जीवन भर भुगतता है। विनोद ही क्यों उसके समुदाय के सभी मनुष्य पीड़ा की गहरी सरणि से गुजरते हैं। उनके घर–परिवार वाले भी गहरी यन्त्रणा से गुजरते हैं। सामाजिक–पारिवारिक दबाव के कारण वे भले ही लिंग विकलांग शिशु को किन्नर समाज को सौंप कर लांछना से मुक्त होने की कोशिश करते हैं किन्तु मन की लांछना प्रतिपल अग्नि बन कर भीतर धधकती रहती है। विनोद की माँ बा प्रतिपल इस अग्नि में जलती है, अपने को धिक्कारती है। उपन्यास में विनोद की परिणति किसी दुर्घटना का परिणाम न होकर सोची–समझी करतूत है। चंडीगढ़ में उसकी स्वीकार्यता देखकर उसके नियोक्ता डोर खींचकर गति अवरुद्ध करने की तैयारी करते हैं। उसे तुरंत दिल्ली बुलाया जाता है और वहाँ माँ की बीमारी के बहाने मुंबई का टिकट थमा कर ठिकाने लगे दिया जाता है। चेतना को कुन्द करने और जाग्रत को सुलाने का यह जवाब है हमारी व्यवस्था का। व्यवस्था चाहती है कि केवल वे ठेकेदार बने रहें, सब कुछ करते रहने का दम भरते रहें। जनता केवल उनके आगे–पीछे घूमती रहे, हाथ फैलाती रहे। वे दाता होने का भ्रम पाले रहें। असल में बौद्धिक चरित्र को विकसित होने का मौका देने का अर्थ है अपनी सत्ता के सामने प्रश्न उठाना और सत्ताएं ऐसे गैर जरूरी प्रश्नों को सुनने की जहमत नहीं उठाती हैं। वे यह सिद्ध करने की कोशिश करतीं हैं कि किसी विनोद में यह कूवत ही नहीं है कि बिना उनकी अनुमति के वे कुछ भी कर सकें, किसी प्रतिष्ठित अखबार में साप्ताहिक कालम लिख सकें, सिर उठा के जी सकें, आत्मनिर्भर बन सकें, उनका तो उनकी इच्छा के बिना सांस लेना भी मुश्किल है।

Key word: *जद्दोजहद, किन्नर, लांछना, लिंग विकलांग, इतर, मुख्य धारा, विमर्श, हाशिए, संस्कृति, बहिष्कृत, उपेक्षित, बेजुबान, भयावह पीड़ा, सरणि, चेतना, नियोक्ता, कुन्द बौद्धिक, आत्मनिर्भर, आख्यान, विज्ञापन, कचोट, जननांग दोषी, छटपटाहट, मुक्ति, आत्ममंथन।*